# विश्व न्याय मन्दिर
## बहाई विश्व केन्द्र
## 9 जनवरी, 2001

महाद्वीपीय सलाहकार मंडलों के सम्मेलन को सम्बोधित

परमप्रिय मित्रगण,

पाँच साल पहले पवित्र भूमि में एकत्रित हुये सलाहकारों के समूह का हमने आहवान किया था कि व्यवस्थित विकास की चुनौतियों को समझने और उनका सामना करने में भागीदार बनकर बहाई जगत की मदद करें। चार वर्षीय योजना की वैभवशाली उपलब्धियाँ इस बात का प्रमाण देती हैं कि उन्होंने जी-जान से प्रत्युत्तर दिया। आज हम आपको उतना ही प्रभावशाली प्रयास करने को कह रहे हैं। इस बार का आपका प्रयास यह सुनिश्चित करने की दिशा में हो कि पाँच वर्षीय योजना का सफल समारम्भ हो।

दिव्य योजना के प्रकट रूप धारण करने के इस अगले चरण की प्रकृति के सम्बन्ध में विचार-विमर्श करने के दौरान आपको प्रभुधर्म के ऐश्वर्य में हो रहे परिवर्तनों के महत्व को ध्यान में रखना होगा। विश्व केन्द्र के 'आर्क' में बने भव्य भवनों का निर्माण ईश्वर की ओर से आदेशित प्रशासनिक व्यवस्था के सुगठन की दिशा में एक बड़े कदम का परिचायक है। चार वर्षीय योजना के दौरान हर महाद्वीप के बहाई समुदाय की संस्थागत क्षमता में एक असाधारण वृद्धि देखी गई। राष्ट्रीय और स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के विकास की गति साफतौर पर नजर आई और जहाँ कहीं भी क्षेत्रीय परिषदें स्थापित हो गईं वहाँ प्रभुधर्म के काम-काज में एक नया उत्साह और प्रभाव पाया गया। 300 से अधिक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना और विकास के साथ बड़े पैमाने पर प्रसार और सुगठन के काम को लगातार जारी रखने के लिये मानव संसाधन को विकसित करने का एक शक्तिशाली उपकरण अब प्रभुधर्म के पास है। इसके अलावा, सरकारों के साथ सम्पर्क द्वारा और नागरिक समिति के संगठनों के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक विकास के लिये किये जा रहे प्रयासों तथा अन्य मानव-क्रियाकलापों की दिशा को प्रभावित करने की बहाई समुदाय की क्षमता काफी हद तक बढ़ी है। बहाउल्लाह का युगधर्म एक नये चरण के कगार पर खड़ा है, इतिहास के एक ऐसे कालखंड में जब, भ्रम और विद्वेष के बावजूद, दुनिया ने शांति की दिशा में सच्ची पहल की है। बहाउल्लाह की सर्वव्यापी और कांतिमय आत्मा की शिक्षाओं की बढ़ती हुई ग्राहयता कोई भी अब साफ तौर पर देख सकता है।

समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को गति देने का लक्ष्य पाँच वर्षीय योजना के दौरान जारी रहेगा और वास्तविकता तो यह है कि रचनात्मक काल की पहली शताब्दी के समापन तक की सभी योजनाओं का यह लक्ष्य होगा। इस महत्वपूर्ण प्रक्रिया को गति तब मिलेगी जब योजना के तीन अंगों का सुव्यवस्थित विकास होगा। ये तीन अंग हैं-व्यक्ति, संस्थायें और समुदाय।

**प्रशिक्षण संस्थान**

हाल ही विश्व न्याय मन्दिर के लिये अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान द्वारा किये गये चार वर्षीय योजना के विश्लेषण से यह बात उभर कर सामने आई है कि प्रशिक्षण संस्थान न केवल व्यक्ति की शक्ति को विकसित करने में प्रभावी हैं, अपितु समुदाय और संस्थान को नवजीवन प्रदान करने में भी सक्षम हैं। इसलिये, विश्व के विभिन्न देशों-प्रदेशों में प्रशिक्षण संस्थान का निरन्तर विकास नई योजना की मूलभूत विशेषता होनी चाहिये।

प्रयास की इस दिशा में प्राप्त अनुभवों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रभुधर्म को समूहों द्वारा स्वीकार किये जाने की प्रक्रिया को गतिशील बनाये रखने के उद्देश्य से प्रशिक्षण संस्थानों के लिये यह आवश्यक हो जायेगा कि अपने समुदायों में मानव संसाधनों के प्रवाह को बनाये रखें। बड़ी संख्या में अनुयायियों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता के लिये इस प्रणाली के विभिन्न तत्वों को परखा जा चुका है और दुनिया भर में ये कारगर भी सिद्ध हुये हैं। विस्तार पाठ्यक्रमों के रूप में और विशेष अभियानों के दौरान आयोजित किये गये 'स्टडी सर्कल' ने अपनी इस क्षमता का प्रदर्शन किया है कि समाज की जड़ तक जाकर यह आध्यात्मिक शिक्षण का एक ढाँचा तैयार कर सकता है। तर्कसंगत ढंग से एक-दूसरे के बाद एक क्रम में चलाये गये ये पाठ्यक्रम कितने लाभदायक हो सकते हैं, यह स्पष्ट हो चुका है। अनेक ऐसे मॉडल सामने आ रहे हैं जो वह दृष्टि प्रदान करते हैं कि किस प्रकार प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने के लिये इस क्रम का उपयोग किया जा सकता है। उदाहरण के लिये, एक क्रम में, वृक्ष के मूल तने की तरह यह पाठ्यक्रम उन पाठ्यक्रमों में मदद करता है, जो इसकी शाखाओं की तरह फूटते हैं और प्रत्येक शाख रूपी पाठ्यक्रम प्रशिक्षण के एक खास क्षेत्र को लेकर तैयार किया गया है। दूसरे उदाहरण में, पाठ्यक्रमों की विभिन्न पगडंडियाँ हैं जो अपनी अलग महत्ता स्थापित करती हुई समानान्तर चलती हैं प्रशिक्षण संस्थान इन सभी तत्वों और मार्गों का परीक्षण करेंगे और उनका इस रूप में उपयोग करेंगे कि आने वाले अवसरों के अनुकूल वे हों।

बारह महीने की योजना के आरम्भ में हमने बहाई बच्चों के आध्यात्मिक प्रशिक्षण और प्रभुधर्म की मुख्य धारा से उन्हें जोड़ने की बात पर बल दिया था। अभी तक मित्रों से प्राप्त प्रत्युत्तर से साफ संकेत मिलता है कि बाल-शिक्षण के महत्व के प्रति बढ़ी हुई जागरूकता इस छोटी अवधि,

किन्तु महत्वपूर्ण योजना की एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। बहाई बच्चों की कक्षाओं को एक नया प्रोत्साहन मिला है। बढ़ी हुई जागरूकता ने इस तथ्य को भी उजागर किया है कि अन्य बच्चों को भी नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा देने के अवसर मिल सकते हैं; जैसे कि स्कूलों के पाठ्यक्रम में बहाई धर्म से सम्बन्धित पाठ्यक्रम को शामिल किये जाने के प्रयासों को सफलता मिली है।

यह एक उत्साहवर्धक संकेत है कि प्रशिक्षण संस्थान बच्चों की कक्षाओं के लिये शिक्षकों के प्रशिक्षण पर अधिकाधिक बल दे रहे हैं। अगर दुनिया भर में बहाई समुदायों के बीच हर आयु-वर्ग के लोगों के लिये नियमित रूप से कक्षाओं का आयोजन किया जाये तो अन्य क्रियाकलापों की भी समान रूप से आवश्यकता होगी। कुछ देशों में राष्ट्रीय और क्षेत्रीय समितियों की स्थापना, बच्चों को शिक्षा देने के दायित्व को निबाहने के उद्देश्य से स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं की मदद के लिये की गई है। जैसे-जैसे अनुभव प्राप्त होते जायेंगे वैसे-वैसे इन देशों में समितियों और प्रशिक्षण संस्थान के बीच के सम्बन्ध उजागर होते जायेंगे, खासतौर से तब जब दोनों एक-दूसरे की मदद करने के उद्देश्य से काम करेंगे। लेकिन कुछ अन्य देशों में प्रशिक्षण संस्थान अकेले क्षेत्रवार पाठ्यक्रमों का संचालन करते हैं। चूँकि इस प्रकार की पहल युवा और वयस्क लोगों के साथ कारगर सिद्ध हुई है, खासतौर से किशोरों के साथ, इसलिये कोई कारण नहीं है कि जहाँ जरूरी हो वहाँ प्रशिक्षण संस्थान बच्चों से सम्बन्धित समान दायित्व क्यों न निबाहें ? सामान्य नियम के तहत प्रशिक्षण संस्थान प्रसार और सुगठन के काम अपने जिम्मे नहीं लेते। फिर भी, बच्चों की कक्षाओं का संचालन एक खास प्रकार का काम है जिसकी तत्काल बड़ी आवश्यकता है। उन देशों में जहाँ यह उत्तरदायित्व प्रशिक्षण संस्थान को दिया गया है वहाँ संस्थान ज्ञान-केन्द्र का काम करता है जो छुटपन से लेकर वयस्कता प्राप्त करने तक के आयु-वर्ग के लोगों को आध्यात्मिक शिक्षा देने के काम से सघन रूप से जुड़ा होता है।

**शिक्षण में व्यक्तिगत पहल**

संस्थानों की बढ़ती हुई ताकत के साथ अब शिक्षण के प्रयासों को सुव्यवस्थित करने की ओर सब जगह ध्यान देने की जरूरत है। अभी-अभी जारी किये गये "सलाहकारों की संस्था" नामक वक्तव्य में हमने सहायक मंडल सदस्य और उनके सहायकों द्वारा अदा की जाने वाली उस भूमिका पर बल दिया है जो व्यक्तिगत पहल और सामूहिक संकल्प, दोनों ही स्तरों पर, मित्रों को इस चुनौती का सामना करने में निबाहते हैं। संस्थान पाठ्यक्रमों के माध्यम से जब व्यक्ति प्रगति करते हैं तब वे प्रभुधर्म के अपने ज्ञान की अभिवृद्धि करते हैं, अन्तर्दृष्टि पाते हैं और सेवा की दक्षता ग्रहण करते हैं। शिक्षण के लिये दिये गये कुछ पाठ्यक्रम निःसंदेह विषय का सामान्य ज्ञान देंगे। दूसरे पाठ्यक्रम बहाउल्लाह के संदेश देने के विभिन्न साधनों पर केन्द्रित होंगे, जिनमें समाज के विभिन्न वर्गों को विभिन्न प्रकार से संदेश देने की बात होगी और जिसमें शिक्षण-प्रयासों के

मित्रों के अनुभव और विवेक की बातें शामिल होंगी। व्यावहारिक कार्य, सीखने और प्रशिक्षण की यह मिली-जुली प्रक्रिया समुदायों को प्रभुधर्म के शिक्षकों की बराबर बढ़ती हुई संख्या के उपहार से भर देगी।

केवल प्रशिक्षण प्रभुधर्म के शिक्षण से सम्बन्धित क्रियाकलापों को बढ़ा दे, यह आवश्यक नहीं। सेवा के हर क्षेत्र में मित्रों को सतत् प्रोत्साहन की जरूरत होती है। हमारी उम्मीद यह है कि अपने 'सहायकों' के सहयोग से सहायक मण्डल सदस्य खासतौर से इस बात पर विचार करेंगे कि किस प्रकार व्यक्तिगत पहल को शिक्षण के लिये प्रोत्साहित किया जाये। जब प्रशिक्षण और प्रोत्साहन प्रभावी होंगे तब विकास की वह संस्कृति सम्पोषित होगी जब अनुयायी स्वाभाविक रूप से यह महसूस करेंगे कि बहाउल्लाह को स्वीकार करने का अर्थ है प्रभुधर्म का संदेश देना। जैसा कि अब्दुलबहा की इच्छा थी, वह "आस्था की पवित्र मशाल जलायें, दिन-रात, बिना रूके, बिना थके परिश्रम करें और अपने जीवन के हर बीतते हुए पल को दिव्य सुरभि के प्रसार और ईश्वर के पावन वचन की प्रतिष्ठा के प्रति समर्पित कर दें।" उनके हृदय ईश्वर के प्रति प्रेम की ज्वाला से इतने प्रदीप्त हो जायें कि जो कोई भी उनके सम्पर्क में आये, उसकी गरमाहट को महसूस कर सके। वे ऐसे लोगों के प्रतीक बन जायें जो पवित्र-हृदय हैं, निःस्वार्थ और विनम्र हैं और ईश्वर पर भरोसे की ताकत से उपजने वाले निश्चय और उत्साह को धारण करने वाले हैं। ऐसी संस्कृति में अनुयायियों के जीवन में शिक्षण सबसे बड़ा अनुराग बन जाता है, एक ऐसी धुन की शक्ल ले लेता है जिसके आगे फिर कुछ और नहीं सूझता। इसमें असफलता के भय का कोई स्थान ही नहीं होता। परस्पर सहयोग, सीखने और जानने के प्रति प्रतिबद्धता और कार्यों की विविधता की चर्चा ही प्रबल मानदण्ड बन जाता है।

**विकास के सुव्यवस्थित कार्यक्रम**

आने वाले महीनों में आप अपने राष्ट्रीय समुदायों को सुव्यवस्थित विकास की योजनायें बनाने में मदद करेंगे, जिनकी परिस्थितियाँ एक-दूसरे से बहुत भिन्न हैं। बहुत सारे ऐसे देश हैं जहाँ खासतौर से क्षेत्रीय स्तर पर बढ़ी हुई संस्थागत क्षमता अब इस सम्भावना का संकेत देती है कि वे अपना ध्यान छोटे भौगोलिक क्षेत्रों की ओर केन्द्रित करें। इनमें से अधिकांश गाँवों और नगरों के छोटे-छोटे समूह होंगे, लेकिन कभी-कभी एक बड़ा नगर और इसके उपनगरीय क्षेत्र इस प्रकार के क्षेत्रों का निर्धारण करेंगे। एक समूह की सीमाओं के निर्धारण में जिन बातों का ध्यान रखा होगा वे हैं संस्कृति, भाषा, यातायात के साधन, रहन-सहन का ढंग और वहाँ के निवासियों का सामाजिक-आर्थिक जीवन। जिन क्षेत्रों में स्थानों का विभाजन किया जायेगा उनके विकास के अनेक कार्यक्रम चलाये जायेंगे। कुछ प्रभुधर्म के संदेश से वंचित क्षेत्र होंगे, जबकि कुछ क्षेत्रों में इक्के-दुक्के बहाई होंगे अथवा कहीं-कहीं बहाइयों के छोटे-छोटे गुरप होंगे, तो कुछ स्थानों में

सुस्थापित समुदाय जोरदार संस्थान प्रक्रिया के माध्यम से ताकत पाते होंगे और कुछ क्षेत्र ऐसे भी हो सकते हैं जहाँ दृढ़ अनुयायियों के ताकतवर समुदाय सुव्यवस्थित और तीव्र गति से हो रहे प्रसार और सुगठन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होंगे।

एक बार जब उचित वर्ग के क्षेत्रों की पहचान कर ली जायेगी तब इन देशों की राष्ट्रीय योजनाओं में होमफ्रंट पायनीयर को अछूते क्षेत्रों में प्रभुधर्म का संदेश देने के लिये भेजने के एक सिलसिलेवार कार्यक्रम का प्रावधान करना होगा। ऐसे लक्ष्यों को आसानी से पाया जा सकेगा अगर पायनीयर संस्थान कार्यक्रम का अनुभवी व्यक्ति हो और इन कार्यक्रमों की सामग्री के माध्यम से ऐसे समर्पित अनुयायियों को प्रशिक्षित करने में समर्थ हो जो उस क्षेत्र में प्रभुधर्म के कामों को करने में सक्षम हों। सच, उन लोगों के लिये एक अनमोल अवसर होगा जो रचनात्मक युग की पहली शताब्दी के शेष बचे सालों में अपना विश्वास ईश्वर में स्थिर करेंगे और अपने देशों के हर एक भाग में दिव्य मार्गदर्शन के प्रकाश को पूरे उत्साह के साथ ले जाने के लिये उठ खड़े होने में आगे होंगे। हम उम्मीद करते हैं कि होमफ्रंट पायनीयर के लिये किया गया यह आवाहन मित्रों के बीच एक बड़ा उत्साह पैदा करेगा और उनके सामने प्रभुधर्म की सेवा के नये द्वार खोलेगा।

इस कार्यक्रम के अनुसार राष्ट्रीय योजनाओं में अन्य ऐसे क्षेत्रों को मजबूत करने के प्रावधानों को भी शामिल करने की जरूरत पड़ेगी जो हालांकि प्रभुधर्म का संदेश पा चुके हैं तथापि विकास के उस स्तर को नहीं पा सके हैं जो उन्हें सघन क्रियाकलापों के लिये तैयार करता है। उन क्षेत्रों में, जहाँ दृढ़ अनुयायियों का समूह है, तत्काल प्रभुधर्म के प्रसार और सुगठन के सुव्यवस्थित कार्यक्रम चलाने पड़ेंगे। हमने यह संकेत दे दिया है कि अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र ने विकास के कुछ प्रतिमानों को खोज निकाला है जो छोटे भौगोलिक क्षेत्रों के लिये उचित हैं। तब से शिक्षण केन्द्र ने विश्व के अनेक देशों के पायलट प्रोजेक्ट का विश्लेषण किया है और इसके परिणाम काफी उत्साहजनक हैं। क्षेत्रवार सुव्यवस्थित विकास के लिये शुरू किये जाने वाले कार्यक्रम के लिए पर्याप्त अनुभव हैं। राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं और क्षेत्रीय परिषदों के साथ जब आप इस विषय पर परामर्श करेंगे तब आपको उसकी जानकारी शिक्षण केन्द्र को देती रहनी होगी।

यह महत्वपूर्ण है कि परिस्थितियों के अनुकूल होने के पहले राष्ट्रीय समुदायों को सघन कार्यक्रम शुरू नहीं करने चाहिये। इन परिस्थितियों में कुछ हैं : समर्पित और क्षमतावान अनुयायियों की एक अच्छी संख्या जो सतत् विकास की पूर्वापेक्षा को समझते हों और जो कार्यक्रम को अंगीकार कर सकते हों; बच्चों के लिये नैतिक शिक्षा की कक्षाओं के संचालन, भक्तिपरक बैठको के आयोजन और उन्नीस दिवसीय सहभोज सभाओं की व्यवस्था करने का अपेक्षाकृत आरम्भिक अनुभव उस समूह विशेष के कुछ समुदायों के पास हो; कुछ स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के पास कुछ हद तक प्रशासनिक क्षमता हो, सामुदायिक जीवन के विकास के लिये सहायक मंडल सदस्यों और

उनके अनेक सहायकों की सक्रिय सहभागिता हो, क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न संस्थाओं के बीच सहयोग की जानी-मानी भावना हो; और इन सबसे ऊपर, सहयोग और समन्वय के कार्यक्रम के साथ प्रशिक्षण संस्थान पूरी तरह से काम कर रहा हो और जो व्यवस्थित ढंग से 'स्टडी सर्कल' को चलाने में कारगर भूमिका निबाह सकता हो।

ऐसे क्षेत्रों में शुरू किये गये कार्यक्रमों का लक्ष्य व्यक्ति, संस्था और समुदाय के स्तर पर आवश्यक दक्षता का निर्माण कर सतत् विकास की प्रक्रिया को जारी रखना होना चाहिये। भव्य और विस्तृत योजनाओं के स्थान पर ऐसे कार्यक्रमों का केन्द्र बिन्दु वे क्रियाकलाप बनें जो साल-दर-साल के अनुभवों के आधार पर बड़े पैमाने पर प्रसार और सुगठन के लिये अनिवार्य सिद्ध हुए हों। सफलता अपनाये गये तरीके और सीखने के प्रति रूचि पर निर्भर करती है। ऐसे कार्यक्रमों को लागू करना प्रशिक्षण संस्थान, सहायक मंडल सदस्य और उनके सहायकों तथा क्षेत्रीय शिक्षण समिति के निकट सहयोग पर निर्भर करेगा।

कार्यक्रम के मूल में मानव संसाधन विकास से ताल-मेल खाती हुई मजबूत प्रक्रिया के साथ-साथ विस्तार की एक ठोस और स्थायी प्रक्रिया अवश्य चलनी चाहिये। शिक्षण के अनेक प्रकार के प्रयास किये जाने की जरूरत है, जिनमें व्यक्तिगत रूप से अनुयायियों द्वारा चलाये गये कार्यक्रम और संस्थाओं द्वारा समर्थित अभियान शामिल हैं। जैसे-जैसे क्षेत्र विशेष में अनुयायियों की संख्या बढ़ती है वैसे-वैसे कुछ संख्या का एक खासा हिस्सा संस्थान से प्रशिक्षित होना चाहिये और उनके द्वारा हासिल की गई क्षमताओं का उपयोग स्थानीय समुदाय के विकास में किया जाना चाहिये।

चार वर्षीय योजना की विशेषताओं की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए हमारे 26 दिसम्बर 1995 के संदेश में इस बात की चर्चा की गई है कि किन चरणों को पार करते हुए एक समुदाय अपना विकास-पथ प्रशस्त करता है। बीते हुए सालों के दौरान समुदायों के साथ विभिन्न चरणों में काम करने के अनुभव विकास के बहुमूल्य कार्यक्रमों के प्रमाण देंगे। इस कार्यक्रम को लागू करने के पहले चरण का काम क्षेत्र के प्रत्येक स्थान की परिस्थिति को निर्धारित करने के लिये किये जाने वाले सर्वेक्षण के लिये किया जाना चाहिये। प्रत्येक समुदाय के लिये प्रारम्भिक लक्ष्य स्टडी सर्कल, बच्चों के लिये नैतिक कक्षाओं और भक्तिपरक बैठकों के आयोजन के लिये होना चाहिये और इनमें क्षेत्र में रहने वाले सभी लोगों का स्वागत किया जाना चाहिये। उन्नीस दिवसीय सहभोज सभाओं को मनाने की ओर भी ध्यान दिया जाना चाहिये और स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं को सक्रिय बनाने के लिये लगातार कोशिश की जानी चाहिये। एक बार जब बहाई जीवन के मूलभूत क्रियाकलापों को लगातार जारी रखने में समुदाय समर्थ हो जाते हैं तो सामाजिक और आर्थिक विकास की छोटी-छोटी योजनायें समुदाय के सुगठन के लिये उठाये जाने वाले अगले कदम हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, साक्षरता योजना, महिलाओं के विकास की परियोजना अथवा पर्यावरण

संरक्षण के कार्यक्रम और यहाँ तक कि एक ग्रामीण विद्यालय की स्थापना का काम भी हाथ में लिया जा सकता है। जैसे-जैसे समुदाय सुगठित होता जायेगा वैसे-वैसे स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं को अधिक-से-अधिक जिम्मेदारियाँ सौंपी जायेंगी।

इन सभी प्रयासों के दौरान समय-समय पर विभिन्न मुद्दों से सम्बन्धित परामर्श उस क्षेत्र विशेष में होते रहने चाहिये, योजना में फेर-बदल के साथ-साथ इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिये कि उत्साह बना रहे और विचारों में एकरूपता हो। सबसे अच्छा यह होगा कि कुछ महीनों के लिये योजना बनाई जाये, जिसमें एक अथवा दो क्रियाकलाप शामिल किये जायें और धीरे-धीरे इस योजना को विस्तार दिया जाये। वे जो योजनाओं को लागू करने में सक्रिय रूप से लगे हैं, चाहे वे संस्थाओं के सदस्य हों या नहीं, वे इस बात के लिये बराबर प्रोत्साहित किये जाते रहने चाहिए कि परामर्श में पूरी तरह से हिस्सा लें। पूरे क्षेत्र के लोगों की अन्य बैठकें भी आवश्यक होंगी। इनमें से कुछ बैठकें अवसर प्रदान करेंगी कि आगे के प्रशिक्षण के लिये बैठक में भाग लेने वालों के अनुभव प्राप्त किये जायें। कुछ बैठकों में कला के इस्तेमाल और संस्कृति के संवर्धन पर बातें केन्द्रित हो सकती हैं कुल मिलाकर, ये बैठकें कार्य, परामर्श और सीखने की एक सघन प्रक्रिया का समर्थन करेंगी।

जो मित्रगण विकास के इन सघन कार्यक्रमों में हिस्सा लें उन्हें यह बराबर याद रखना चाहिये कि इन सभी कार्यक्रमों का उद्देश्य यह है कि बहाउल्लाह का प्रकटीकरण जनसाधारण तक पहुँचे और प्रभुधर्म की शिक्षाओं को अपने जीवन में ढाल कर वे अपना आध्यात्मिक और भौतिक विकास करने में समर्थ हो पायें। सच तो यह है कि दुनिया के अधिकांश लोग न केवल तैयार हैं, अपितु इस बात के लिये तरस रहे हैं, क्योंकि बहाउल्लाह के आशीष उन्हें तब ही प्राप्त हो सकते हैं जब उनके द्वारा परिकल्पित नये समाज की संरचना के लिये वे प्रतिबद्ध हों। बड़े पैमाने पर शिक्षण के क्रियाकलापों को सुव्यवस्थित करने की कला को सीखने के क्रम में बहाई समुदायों को अब बेहतर संसाधन प्राप्त हो रहे हैं, जिनके सहारे वे लोगों की इस इच्छा को पूरा कर सकते हैं। जिन प्रयासों, जिस त्याग के लिये गुहार लगाई जायेगी, उसे करने से वे अपने आपको रोके नहीं रख सकते हैं।

**एक आध्यात्मिक उत्साह**

यह साफ है कि जो कार्यक्रम यहाँ बतलाये गये हैं वे सभी अनेक देशों के लिये उपयुक्त होने के बावजूद हर परिस्थिति में लागू नहीं किये जा सकते। हम बहाई समुदायों की योग्यता पर भरोसा करते हैं कि वे ऐसी योजनाओं का सृजन करेंगे जो ऊपर बताये गये सभी कार्यक्रम न सही, हर राष्ट्रीय समुदाय की परिस्थितियों के अनुकूल इन कार्यक्रमों की अन्तर्दृष्टि, उनकी सोच को अवश्य ही शामिल करेंगे। यह सही है कि बहाई समुदाय अनेक अनिवार्य कार्यक्रमों को पूरा करने

में जुटे हैं, जैसे, जन-सूचना से सम्बन्धित क्रियाकलाप, प्रभुधर्म के प्रसार के लिये किये जा रहे प्रयास, प्रभुधर्म के बाहरी मामलों से सम्बन्धित कामकाज, साहित्य का प्रकाशन और विभिन्न प्रकार की सामाजिक तथा आर्थिक विकास से जुड़ी परियोजनाओं के काम। यह आवश्यक है कि जब कार्यक्रम बनाये जायें तो इन चुनौतियों को भी वे ध्यान में रखें।

योजना बनाने की प्रक्रिया की जो प्रकृति है जिसके माध्यम से आप मित्रों को अनेक तरह से मदद करेंगे, वह अपने आप में अनूठी है। मूल रूप से यह एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसमें समुदाय और संस्था अपने प्रत्येक प्रयास का ताल-मेल ईश्वर की इच्छा के साथ बैठाना चाहेंगे। ईश्वर की 'प्रमुख योजना' निरन्तर काम कर रही है और इससे उत्पन्न होने वाली शक्तियाँ मानवजाति को अपने निर्धारित सौभाग्य की ओर जाने के लिये बाध्य कर रही हैं। अपनी कार्ययोजनाओं में प्रभुधर्म की संस्थाओं को इन महान शक्तियों के उपस्थित होने और उनके काम करते रहने की अन्तर्दृष्टि को अवश्य ही समझना चाहिये, जिन लोगों की सेवा वे कर रहे हैं उनके अन्दर छिपी सम्भावनाओं को ढूँढ़ निकालना चाहिये, अपने समुदायों के संसाधन और उनकी ताकत का आंकलन करना चाहिये और अनुयायियों की मुक्त प्रतिभागिता सुनिश्चित करने के लिये व्यावहारिक कदम उठाये जाने चाहियें। इस प्रक्रिया की देख-रेख करते रहने और इसे आगे बढ़ाते रहने का पावन कार्य आपको सौंपा गया है। इसे पाने की आपकी क्षमता में हमारा पक्का विश्वास है। बहाउल्लाह अपनी अचूक अनुकम्पाओं और शक्ति सम्पन्न उपहारों के आशीष से आपको भरा-पूरा रखें, यही कामना है।

(हस्ताक्षरित : विश्व न्याय मंदिर)